

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 19, गैलाटियन्स

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह गैलाटियन्स की पुस्तक पर न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर व्याख्यान 19 में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। डॉ. डेव मैथ्यूसन।

ठीक है, चलिए शुरू करते हैं।

आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें। और फिर मुझे लगता है कि पिछली बार जब हम साथ थे तो हम गैलाटियन्स में चले गए थे। तो, हम वास्तव में उस पुस्तक के माध्यम से काम करेंगे।

आप देखेंगे कि हम उस बिंदु की ओर बढ़ रहे हैं जहां हमारी एक और परीक्षा आने वाली है। ऐसा लगता है कि आज से एक सप्ताह बाद सोमवार होगा, इसलिए अगला सोमवार होगा। इस गुरुवार रात को एक और वैकल्पिक लेकिन अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र है।

मैं आपको अगली कक्षा अवधि तक समय और स्थान के बारे में अधिक जानकारी दूंगा, उम्मीद है कि उससे पहले। जैसे ही मुझे सब पता चल जाएगा, मैं आपको ईमेल करूंगा। लेकिन इस गुरुवार रात को अतिरिक्त क्रेडिट के लिए एक समीक्षा सत्र की योजना बनाएं।

और फिर, आज से एक सप्ताह बाद परीक्षा नंबर दो होगी।

ठीक है, आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें, और फिर हम गैलाटियन्स को देखना समाप्त करेंगे।

पिता, ब्रेक लेने और आराम करने और तैयार होने का मौका देने के लिए धन्यवाद। और भगवान, मैं प्रार्थना करता हूं कि हमें शेष सेमेस्टर को पूरा करने के लिए ऊर्जा मिलेगी। और मैं अब प्रार्थना करता हूं कि चूंकि हम आपके रहस्योद्घाटन के केवल एक छोटे से हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप हमें इसके बारे में गंभीर रूप से सोचने, ऐतिहासिक रूप से सोचने के लिए ज्ञान देंगे, लेकिन इसके बारे में इस संदर्भ में सोचने के लिए कि आप इस विशेष के माध्यम से कैसे बोलना जारी रखते हैं आज ही अपने लोगों के लिए बुक करें। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, हमने गलातियों की जिस पुस्तक के बारे में कहा था वह संभवतः प्रांत के दक्षिणी भाग, गलाटिया के रोमन प्रांत में चर्चों के एक समूह को लिखी गई थी, जो इसे चर्चों के एक समूह के बीच में रखेगी जहां पॉल ने दौरा किया होगा। उनकी मिशनरी यात्राओं में से एक जो उन्हें दक्षिणी एशिया माइनर या आधुनिक तुर्की तक ले गई। हमने यह भी सुझाव दिया कि पॉल जिस समस्या का सामना कर रहा था वह एक ऐसा समूह था जिसे विद्वानों ने यहूदीवादियों का नाम दिया था, जो कि संभवतः यहूदी ईसाइयों का एक समूह था जो दावा कर रहे थे कि अन्यजातियों को मूसा के कानून के प्रति समर्पण करने की आवश्यकता है, यानी पुरुषों के लिए जिसका मतलब खतना

करना है, हर किसी के लिए इसका मतलब सब्बाथ कानूनों का पालन करना, खाद्य कानूनों का पालन करना है, विशेष रूप से उन कानूनों का पालन करना जो किसी को ईश्वर के सच्चे लोगों, इज़राइल के सदस्य के रूप में चिह्नित करते हैं। और इसलिए, पॉल यहूदी ईसाइयों के एक समूह का सामना कर रहा था जो तब गलातिया में चर्च में शिक्षा दे रहे थे या घुसपैठ कर चुके थे और गैर-यहूदी ईसाइयों को बता रहे थे कि यीशु में उनका विश्वास पर्याप्त नहीं था, लेकिन उन्हें पुराने नियम के कानून का पालन भी करना होगा।

तो, गलातियों की पुस्तक पॉल का पाठकों को उस कार्रवाई का पालन न करने के लिए मनाने और इसके बजाय उन्हें केवल यीशु मसीह पर भरोसा करने के लिए मनाने का प्रयास होगा। अब पॉल यह सुझाव नहीं देने जा रहा है कि उन्हें कानून पर भरोसा करने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कैसे रहते हैं या क्या करते हैं, लेकिन पॉल यह तर्क देने जा रहे हैं कि मूसा के कानून पर भरोसा नहीं करना चाहिए और न ही करना चाहिए। इन गैर-यहूदी ईसाइयों के जीवन में एक भूमिका निभाने की जरूरत है और हम देखेंगे कि वह ऐसा क्यों कहते हैं और इसमें क्या शामिल है। मुझे लगता है कि हम भी इसे देखकर समाप्त कर चुके हैं।

मैंने गैलाटियन्स में कहा, पॉल ने पूरी किताब में एक विरोधाभास स्थापित किया है, एक विरोधाभास जिसे मैंने इन दो मंडलियों द्वारा दर्शाया है। एक अर्थ में, ये दो वृत्त प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, ये दो वृत्त बीच के अंतर का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, यह भगवान के राज्य के संदेश का प्रतिनिधित्व करेगा, जिसे यीशु ने गॉस्पेल में पेश किया था, कि पुरुष और महिलाएं पहले से ही राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और इसमें भाग ले सकते हैं, भले ही अभी तक पूरी तरह से और संपूर्ण तरीके से नहीं। यह इस वर्तमान दुनिया के नियंत्रण में या उसके दायरे में जीवन का प्रतिनिधित्व करेगा जो पाप और मृत्यु की विशेषता और प्रभुत्व है और एक शब्द जिसे पॉल उपयोग करता है, मांस, जो मेरे भौतिक शरीर को संदर्भित नहीं करता है, लेकिन संदर्भित करता है मैं अपनी कमज़ोरी और इस वर्तमान दुष्ट युग के प्रभाव के कारण पाप के प्रति संवेदनशील हूँ।

पॉल भी कानून को इस श्रेणी में रखेगा, इसलिए नहीं कि वह इसे पापपूर्ण या बुरा मानता है, बल्कि सिर्फ इसलिए कि इसमें अंततः इस स्थिति पर काबू पाने की क्षमता नहीं है। लेकिन फिर पॉल एक अन्य क्षेत्र या शक्ति या नियंत्रण या प्रभाव का एक और क्षेत्र बनाता है, जिसके बारे में उनका कहना है कि यह जीवन और धार्मिकता और भगवान की पवित्र आत्मा की विशेषता है, एक ऐसा क्षेत्र जिसमें हम मसीह में मुक्ति के आशीर्वाद का अनुभव करते हैं। इसलिए, पॉल मानवता और जीवन को इन दो वैचारिक प्रकार के क्षेत्रों में विभाजित करने में सक्षम देखता है।

फिर, जीवन और मृत्यु की विशेषता वाला एक क्षेत्र इस वर्तमान दुष्ट युग, इस वर्तमान दुनिया के प्रभाव में मेरा जीवन होगा, और प्रभाव का एक अलग क्षेत्र जो इस बात से निर्धारित होता है कि मैं मसीह में कौन हूँ और जीवन और धार्मिकता और होने की विशेषता है पवित्र आत्मा। अब, एक और बात, और यह विरोधाभास गैलाटियन्स में हर जगह चलेगा। गलाटियन्स के बारे में कहने लायक एक और बात यह है कि जब हम इसे पढ़ते हैं, तो इस बात में बहुत दिलचस्पी होती है कि गलाटियन्स वास्तव में किस प्रकार का पत्र है।

पहली सदी के ग्रीको-रोमन भाषणों या ग्रीको-रोमन प्रकार के दार्शनिक भाषणों के आलोक में गलाटियन्स को पढ़ने में भी बहुत रुचि रही है। उदाहरण के लिए, वास्तव में हमारे पास कई अलंकारिक भाषण हैं, यही वह शब्द है जिसकी मुझे तलाश थी। हमारे पास वास्तव में कई पुस्तिकाएं हैं जो अरस्तू और पहली शताब्दी के भाषणों के अलंकारिक प्रकार के निर्माण के उचित तरीकों पर चर्चा करती प्रतीत होती हैं जो एक निश्चित बिंदु पर बहस करने के उचित तरीके का वर्णन करती हैं।

इसलिए, किसी को समझाने या अपनी बात पर बहस करने के लिए, बयानबाजी करने वाले कुछ पैटर्न के अनुसार भाषण तैयार करेंगे। कुछ विद्वानों का मानना है कि गैलाटियन्स वास्तव में केवल एक लिखित पत्र नहीं था, बल्कि वास्तव में पहली शताब्दी के एक विशिष्ट अलंकारिक भाषण के अनुरूप था। आप निश्चित रूप से उसमें वैधता देख सकते हैं।

यदि पॉल अपने पाठकों को यहूदियों द्वारा प्रस्तावित कार्रवाई के तरीके को न अपनाने के लिए, बल्कि पॉल द्वारा प्रस्तावित कार्रवाई के तरीके को अपनाने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा है, तो आप देख सकते हैं कि जहां अलंकारिक भाषण सिर्फ टिकट हो सकता है, बस वह चीज जो वह चाहता है अपने पाठकों को मनाने के लिए उपयोग करना। इन तथाकथित पुस्तिकाओं के भीतर, जो हमारे पास अरस्तू से उपलब्ध हैं और रिकॉर्ड हैं कि कैसे इन अलंकारिक भाषणों का निर्माण अक्सर किया जाता था, विशेष रूप से अदालत कक्ष में जहां कोई बचाव का निर्माण करता था, किसी की ओर से बचाव का भाषण। फिर, भाषण के भीतर उपयुक्त योजनाएँ और गतिविधियाँ थीं।

और यहां एक उदाहरण दिया गया है कि इसे गैलाटियन्स पर कैसे लागू किया गया है। गलातियों के अध्याय एक के पहले पाँच छंद बिल्कुल पॉल के अन्य पत्रों के समान ही शुरू होते हैं जैसे एक पत्र शुरू होता है। हालाँकि, कुछ लोगों ने सोचा है कि बाकी गलाटियन वास्तव में ग्रीको-रोमन दुनिया में पहली सदी के इन अलंकारिक भाषणों की तरह विकसित हुए हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, अधिकांश भाषण एक उपदेश के साथ शुरू होंगे जो कि मामले का एक बयान और मुद्दे या समस्या का एक बयान था। और कुछ ने अध्याय एक, छह से 11 तक की पहचान पहली शताब्दी के ग्रीको-रोमन भाषण में उपदेश के समतुल्य के रूप में की है। और निश्चित रूप से, धारणा यह है कि पॉल को या तो अपनी शिक्षा के हिस्से के रूप में ग्रीको-रोमन बयानबाजी में प्रशिक्षित किया गया होगा, या वह ग्रीको-रोमन भाषण पैटर्न से अवगत रहा होगा।

तो, एक उपदेश, एक आख्यान, दूसरी विशेषता जो आपको अक्सर कुछ अलंकारिक भाषणों में मिलती है, वह आख्यान था जो मुख्य थीसिस और मामले के मुख्य तथ्यों को बताता या निर्धारित करता था। और कुछ ने इसकी पहचान अध्याय एक के शेष भाग और अध्याय दो से की है। यह, फिर से, एक तरह का बयान और उन तथ्यों का पूर्वाभ्यास होगा जो मामले से संबंधित हैं।

प्रस्ताव आएगा, जो, हम वहां जाते हैं, मामले में सहमति के बिंदुओं का सारांश है, और मुख्य रूप से थीसिस जिस पर बहस होने वाली है। तो, प्रस्ताव. फिर प्रोबेटियो, जिसे प्रोबेटियो के नाम से

जाना जाता है , जहां आप बस अपनी स्थिति के लिए सभी समर्थनों और सबूतों को सूचीबद्ध करना और व्यवस्थित करना शुरू कर देंगे।

तो फिर, यदि आप अदालत में बहस कर रहे हैं कि कोई व्यक्ति निर्दोष या दोषी क्यों है, तो आपको सभी सबूतों और तर्कों का अभ्यास करना होगा कि वे दोषी क्यों हैं या उन्हें दोषी क्यों ठहराया जाना चाहिए। और अंत में, उपदेश । कुछ भाषणों में, विशेष रूप से वे भाषण जिनका उद्देश्य किसी अतीत के दोषी या निर्दोष फैसले के लिए बहस करना नहीं था, बल्कि कुछ भाषणों का उद्देश्य पाठकों को भविष्य में कार्रवाई का एक निश्चित तरीका अपनाने के लिए राजी करना था।

इस प्रकार के भाषणों में अक्सर एक उपदेश होता था , जो पाठकों को भविष्य में उठाए जाने वाले कदमों के बारे में समझाने या आश्वासित करने के लिए उपदेश या आदेश थे। और इसलिए गैलाटियन्स के लिए अध्याय 5 के शेष भाग से लेकर अध्याय 6 के अधिकांश भाग को अक्सर उपदेश के रूप में देखा जाता है, जो ग्रीको-रोमन भाषण के उपदेश के बराबर है । और फिर पॉल ने अपना पत्र समाप्त किया जैसे वह पहली सदी के अधिकांश विशिष्ट पत्रों को समाप्त करता है।

तो, कुछ लोग दावा करेंगे कि आपके पास जो कुछ है, वह एक अलंकारिक भाषण है जिसे एक पत्र के विशिष्ट परिचय और निष्कर्ष द्वारा वर्गीकृत किया गया है। तो, यह वास्तव में एक पत्र है जिसमें एक मौखिक अलंकारिक भाषण का लिखित विवरण शामिल है जिसे पॉल शायद मौखिक रूप से दे सकता था या देता अगर वह अपने पाठकों को समझाने के लिए वहां होता। तो, धारणा यह है कि वह बस एक सामान्य अलंकारिक भाषण पैटर्न पर चित्रण कर रहा है जिससे वह और उसके पाठक परिचित होंगे, ताकि उन्हें फिर से इन यहूदीवादियों के पाठ्यक्रम का पालन न करने के लिए प्रेरित किया जा सके, बल्कि उस पाठ्यक्रम का पालन किया जा सके जिसकी सिफारिश पॉल कर रहा है। .

और वह यह है कि मोज़ेक कानून का पालन करने और मोज़ेक कानून के प्रति समर्पण करने के अलावा, यीशु मसीह में विश्वास, उनके औचित्य और उनके उद्धार के लिए पर्याप्त है। फिर, मेरी भावना यह है कि संभवतः पॉल ने अपने पूरे पत्र के लिए ग्रीको-रोमन भाषण पैटर्न का उपयोग नहीं किया। अब, मुझे लगता है कि पॉल ने शायद अपनी बात मनवाने के लिए पहली सदी के आलंकारिक तरीकों का सहारा लिया।

मेरा मतलब है, जब वह आश्वासित हो जाता था कि उसके पास ईश्वर का संदेश है, तो वह अपने पाठकों को समझाने और उन्हें विश्वास दिलाने के लिए किसी भी चीज़ का उपयोग करता था कि यही मामला था। लेकिन जब आप गैलाटियन्स को ध्यान से देखते हैं, तो आपके पास एकमात्र औपचारिक मार्कर होते हैं, याद रखें जब मैंने कार्टून, मूंगफली कार्टून की तस्वीर डाली थी, और मैंने आपसे पूछा था कि आप कैसे जानते हैं कि यह क्या था, और आपने बक्से, अनुक्रम की पहचान की थी बक्सों की संख्या, भाषण के बुलबुले, इस तरह की चीजें, उस तरह के अतिरंजित पात्र जो मानव रूपों से मिलते जुलते थे जो वास्तव में वास्तविक रूप से एक इंसान की तरह नहीं दिखते थे, इस तरह की चीजों से आपको पता चलता है कि यह एक कार्टून था। जब आप

गैलाटियन्स को यह जानने के लिए देखते हैं कि हमें कौन से सुराग मिलते हैं जो हमें बताएं कि यह किस प्रकार का साहित्य है, तो आपको केवल यही मिलता है कि पॉल केवल पहली शताब्दी का एक विशिष्ट पत्र लिख रहा है।

इसलिए व्यक्तिगत रूप से, हालांकि यह बहुत लोकप्रिय और आम है, मुझे व्यक्तिगत रूप से इस योजना पर संदेह है, और मैं आश्चर्य नहीं हूँ कि पॉल विशिष्ट पहली शताब्दी के अलंकारिक भाषण पैटर्न का पालन कर रहा था। इसके बजाय, वह पहली सदी के पत्र लिखने के विशिष्ट तरीके का पालन कर रहा था। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हमें ऐसा करना चाहिए, कि पॉल इस उपदेश, कथन और प्रस्ताव का पालन करने की कोशिश कर रहा है, बल्कि इसके बजाय वह एक विशिष्ट पत्र, एक परिचय का पालन करता है, वह धन्यवाद ज्ञापन को छोड़ देता है क्योंकि वह कुरिन्थियों से बहुत परेशान है, फिर का निकाय पत्र, उपदेश, आदेश जो पॉल आमतौर पर अपने सभी पत्रों में देता है, और फिर पहली सदी के एक विशिष्ट पत्र का समापन।

तो फिर, मुझे इस पर थोड़ा संदेह है, लेकिन कई लोग, विशेष रूप से गैलाटियन के साथ, कई लोग पॉल को पहली शताब्दी के विशिष्ट प्रकार के आलंकारिक भाषण का पालन करते हुए देखेंगे। फिर, क्या पॉल को इसमें प्रशिक्षित किया गया था या क्या उसे एशिया माइनर में अपनी यात्राओं के दौरान इसके बारे में अवगत कराया गया होगा, इस बारे में अलग-अलग सुझाव हैं कि वह ऐसा क्यों कर सकता है। लेकिन फिर, मुझे नहीं लगता कि पॉल पहली सदी का एक विशिष्ट पत्र लिखने के अलावा कुछ और कर रहा है, और मुझे नहीं लगता कि उसका ऐसा इरादा था, न ही उसके पहले पाठकों ने इसे इस तरह पढ़ा होगा।

अब, जब आप गलातियों के अध्याय एक और दो को पढ़ते हैं, जब आप पुस्तक की शुरुआत में, उनके परिचय के बाद, उनके विशिष्ट पत्र-संबंधी परिचय को देखते हैं जहां वह अपनी और अपने पाठकों की पहचान करते हैं, तो पहले दो अध्यायों में क्या चल रहा है? क्योंकि पॉल, हालांकि मुझे संदेह है कि हमें इसके बारे में एक वर्णन के रूप में बात करनी चाहिए, पॉल हमें अध्याय एक के अंत में और अध्याय दो में यहूदी धर्म में अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बहुत कुछ बताता है। और सवाल यह है कि पॉल ऐसा क्यों करता है? पॉल रूपांतरण से पहले एक यहूदी के रूप में अपने जीवन के बारे में बहुत सारी बातें करता है, और हमने पॉल के रूपांतरण के संबंध में इस पाठ को पहले ही संक्षेप में देखा है, जहां मैं इस धारणा को चुनौती देता हूँ कि हम अक्सर पॉल के बारे में सोचते हैं कि वह कम से कम संतुष्ट होता जा रहा है कानून और अधिकाधिक निराश होता जा रहा था और अधिकाधिक दोषी महसूस कर रहा था क्योंकि वह इसका पालन नहीं कर सका। उन ग्रंथों में से एक जो इस पर सवाल उठाता है वह गलातियों का है, क्योंकि गलातियों एक और दो में, पॉल यहूदी धर्म में अपने जीवन से पूरी तरह खुश था।

और फिर, वह इतना प्रखर था और अपने पैतृक धर्म को संरक्षित करने पर तुला हुआ था कि यहां तक कि, ऐसा कहा जाता है, वह चर्च पर भी अत्याचार कर रहा था और कानून और यहूदी धर्म के प्रति उत्साह के कारण ईसाइयों को मौत के घाट उतार रहा था। यदि आप विभिन्न यहूदी आंदोलनों को याद करते हैं जिनके बारे में हमने इस सेमेस्टर में पहले बात की थी, तो पॉल एक प्रकार का उत्साही फरीसी था। इसलिए, पॉल यहूदी धर्म में अपने जीवन के बारे में बहुत सारी बातें करता है और गलातियों के अध्याय एक और दो में अपने रूपांतरण से संबंधित है।

और सवाल यह है कि पॉल ऐसा क्यों करता है? वह इस तथ्य का अभ्यास करने में लगभग दो अध्याय क्यों खर्च करता है कि वह एक अच्छा यहूदी और एक धर्मनिष्ठ यहूदी था और उसने कानून का पालन किया और उसने यह और वह किया, लेकिन फिर यीशु मसीह ने दमिश्क की सड़क पर उसका सामना किया और पॉल को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया और उस समय अन्यजातियों के लिए भी प्रेरित होने के लिए बुलाया और नियुक्त किया गया। पॉल को वह सब क्यों बताना पड़ा? क्योंकि याद रखें कि वह क्या कर रहा है, वह चिंतित है कि गलाटिया प्रांत के दक्षिणी भाग, गलाटिया में इन गैर-यहूदी पाठकों में से कुछ ने, अधिनियमों के अनुसार, इनमें से कुछ शहरों में चर्च स्थापित किए हैं, वह अब चिंतित है कि उनमें से कुछ को नष्ट किया जा रहा है इन यहूदीवादियों द्वारा गुमराह किया गया है जो कह रहे हैं कि अब तुम्हें भी मोज़ेक कानून के अधीन होना होगा। फिर पॉल ने अपने जीवन की कहानी, एक यहूदी के रूप में अपने जीवन और अपने रूपांतरण के बारे में कुछ संक्षेप में क्यों बताया? खैर, कुछ बातें चल रही हैं, लेकिन सबसे पहले, इससे पहले कि हम यह पूछें कि उसने आपके नोट्स में ऐसा क्यों किया, मैंने यह सवाल भी उठाया है कि अध्याय एक के पहले चार छंदों में क्या चल रहा है। क्योंकि वास्तव में, अध्याय एक के पहले चार छंदों में, पॉल के पत्र में आने से पहले, वह अभी भी पत्र-संबंधी परिचय में है।

इससे पहले कि वह अपने पत्र के मर्म में उतरें, मुझे यकीन है कि वह वास्तव में अपने पाठकों को पहले से ही अपने पक्ष में कर रहे हैं और अपना केस जीतने की कोशिश कर रहे हैं। क्योंकि वह यह कहकर शुरू करता है, कि पॉल, एक प्रेरित, न तो मानव आयोग द्वारा और न ही मानव अधिकारियों से भेजा गया था। अब, यह दिलचस्प है।

पॉल इस तरह स्पष्ट रूप से बात नहीं करता। इस तरह के परिचय में अपने कुछ अन्य पत्रों में, वह यह दावा नहीं करता है कि उसे केवल यीशु मसीह द्वारा नियुक्त किया गया था, कि उसका सुसमाचार किसी अन्य मानवीय प्राधिकारी द्वारा नहीं आता है। तो, वह क्या कह रहा है? हम एक क्षण में उस पर लौटेंगे।

वह कहता है, मैं न तो मानवीय आदेश से और न ही मानवीय अधिकारियों से प्रेरित हूं, बल्कि यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के माध्यम से प्रेरित हूं जिसने उसे मृतकों में से जिलाया। और परिवार के सभी सदस्य जो मेरे साथ गलातिया की कलीसियाओं में हैं। वह गलातिया का दक्षिणी प्रांत और कुछ शहर होंगे जहां पॉल ने अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान दौरा किया था।

और वह आगे कहता है, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले, अब यह सुनो, जिस ने परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार हमें वर्तमान बुरे युग से छुड़ाने के लिये हमारे पापों के लिये अपने आप को दे दिया। . अब, पॉल ने जो किया है वह दो चीजें हैं। नंबर एक, पहला भाग अध्याय एक और दो को समझने की कुंजी है जहां पॉल कहता है, मैं किसी मानवीय अधिकार या किसी मानवीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा प्रेरित नहीं हूं, बल्कि पूरी तरह से यीशु मसीह की पसंद या आदेश से प्रेरित हूं।

यह महत्वपूर्ण होगा, हम एक क्षण में देखेंगे, यह समझने के लिए कि अध्याय एक और दो में क्या चल रहा है। परन्तु फिर पौलुस आगे कहता है, यीशु मसीह ने तुम्हें वर्तमान बुरे युग से बचाया है।

अब, वह ऐसा क्यों कहता है? वह महत्वपूर्ण क्यों है? यदि मैं इस पर वापस जा सकता हूं, यदि यह चक्र वर्तमान दुष्ट युग का प्रतिनिधित्व करता है, ध्यान दें कि क्या मैं सही हूं कि पॉल ने कानून को इसके भीतर रखा है, तो अपने पाठकों को याद दिलाकर, आपको पहले ही वर्तमान दुष्ट युग से बचाया जा चुका है।

और पुनरुत्थान के संदर्भ पर ध्यान दें। यह मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से है कि आपको वर्तमान दुष्ट युग से छुटकारा दिलाया गया है और इस युग का उद्घाटन किया गया है कि यीशु ने सुसमाचार में इसे राज्य कहा है। अब, आप जीवन, धार्मिकता और पवित्र आत्मा के साथ एक नए क्षेत्र से संबंधित हैं, लेकिन आपको वर्तमान दुष्ट युग से बचा लिया गया है, जहां बाद में गैलाटियन में, पॉल यहां कानून डालने जा रहा है।

तो, पॉल ने क्या किया है? पहले से ही, उसने अपना मामला बनाना और अपने पाठकों को अलग करना शुरू कर दिया है। यदि उन्हें पहले ही वर्तमान दुष्ट युग से छुटकारा मिल चुका है, जैसा कि पॉल अध्याय एक, श्लोक चार में कहता है, तो कानून का अब उन पर अधिकार नहीं होना चाहिए। इसे अब उनके जीवन में कोई भूमिका नहीं निभानी चाहिए।

क्योंकि फिर, बाद में अध्याय तीन में, पॉल कानून को इस श्रेणी में रखेगा। फिर, इसलिए नहीं कि कानून खराब है। से बहुत दूर।

पॉल का दावा है, नहीं, कानून अच्छा है। यह ईश्वर की इच्छा को व्यक्त करता है। लेकिन मूसा की वाचा के हिस्से के रूप में कानून, बाध्यकारी कानून, मूसा की बाध्यकारी वाचा, पॉल आश्वस्त है, अंततः पाप और मृत्यु पर काबू पाने की शक्ति नहीं है।

और इसलिए, वह इसे इसके अंतर्गत रखता है, इसलिए नहीं कि यह इन तीनों के बराबर है और यह बुरा या बुरा है। मैं चाहता हूं कि आप इसे समझें। लेकिन इसमें अंततः इस पर काबू पाने और इसे उत्पन्न करने की शक्ति नहीं है।

तो, पॉल कहते हैं, आपको अध्याय एक, श्लोक चार में बुराई, वर्तमान बुरे युग से छुटकारा मिल गया है। और बाद में, वह कानून को भी इसी श्रेणी में डाल देगा। इसलिए, यदि पॉल उन्हें अध्याय एक, श्लोक चार में इस बात से सहमत करवा सकता है, तो उसे उन्हें इस बात से सहमत कराने में सक्षम होना चाहिए कि कानून अब उनके जीवन पर बाध्यकारी अधिकार नहीं है।

अब, हमें अभी भी यह सवाल पूछना है कि कानून क्या भूमिका निभाता है? क्या पॉल इसे ईसाइयों के जीवन में कोई भूमिका देता है? और मुझे यकीन है कि ऐसा होता है। लेकिन जहां तक मोज़ेक वाचा के हिस्से के रूप में इस बाध्यकारी कानून का सवाल है, पॉल आश्वस्त है कि यह अब लागू नहीं है। तो पहले से ही अध्याय एक में, श्लोक एक से चार तक, पॉल अपने पाठकों को यह स्वीकार करने के लिए तैयार कर रहा है कि वह बाद में क्या कहने जा रहा है।

लेकिन यहूदी धर्म के भीतर उसके जीवन के इस पूर्वाभ्यास के साथ अध्याय एक और दो में क्या चल रहा है? उफ़, क्षमा करें, हमने पहले ही उस पर गौर कर लिया है। गलातियों एक और दो।

अध्याय एक, श्लोक 13 और 14 में, पॉल ईसाई धर्म में रूपांतरण से पहले अपने जीवन पर चर्चा करता है।

यहीं पर वह खुद का वर्णन इस तरह करते हैं। वह कहते हैं, आपने सुना है, गैलाटियन पाठकों, आपने यहूदी धर्म में मेरे पहले जीवन के बारे में कोई संदेह नहीं सुना है। मैं परमेश्वर की कलीसिया पर हिंसक रूप से अत्याचार कर रहा था और उसे नष्ट कर रहा था।

मैं यहूदी धर्म में अपने ही उम्र के कई लोगों से आगे बढ़ गया, क्योंकि मैं अपने पूर्वजों की परंपराओं के प्रति कहीं अधिक उत्साही था। तो वे दो छंद यहूदी धर्म में पॉल के जीवन का एक सारांश हैं। और हम वापस आएँगे और पूछेंगे, उसे उन्हें यह बताने की ज़रूरत क्यों है? हालाँकि, दूसरी बात यह है कि श्लोक 15 से 17 में, पॉल अपने रूपांतरण से संबंधित है।

इसलिए, वह कहते हैं, हालाँकि, जब भगवान, जिन्होंने मुझे पैदा होने से पहले ही अलग कर दिया था और अपनी कृपा से मुझे बुलाया था, अपने बेटे को मुझमें प्रकट करने के लिए प्रसन्न हुए, ताकि मैं अन्यजातियों के बीच उनका, यीशु का प्रचार कर सकूँ, मैंने ऐसा किया किसी अन्य मनुष्य के साथ व्यवहार न करें। और न मैं यरूशलेम को उन लोगों के पास गया जो मुझ से पहिले ही प्रेरित थे, मैं तुरन्त अरब को चला गया, और उसके बाद दमिश्क को लौट आया। इसलिए, पॉल ने हमें यह बताना सुनिश्चित किया कि अपने रूपांतरण के समय, वह तुरन्त यरूशलेम नहीं गया था।

फिर शेष अध्याय 1 और अध्याय 2 उन घटनाओं से संबंधित हैं जो पॉल के रूपांतरण के ठीक बाद हुई थीं। फिर से, मेरी राय में, पॉल के रूपांतरण के बाद हुई मुख्य घटनाओं का सारांश, जिसमें जेरूसलम काउंसिल भी शामिल है जिसके बारे में हमने अधिनियमों में पढ़ा है। अधिनियम अध्याय 15.

अब सवाल यह है कि पॉल यहूदी धर्म में अपने जीवन और अपने रूपांतरण का यह रेखाचित्र देकर और फिर अपने रूपांतरण के ठीक बाद किए गए कुछ कार्यों का संक्षिप्त विवरण देकर क्या कर रहा है? मुझे ऐसा लगता है कि पॉल यही कर रहा है। यह अध्याय 1 के पहले कथन पर वापस जाता है। पॉल, एक प्रेरित, मानवीय निर्णय से नहीं, न ही मानवीय इच्छा से, बल्कि प्रभु यीशु मसीह के आदेश से। सबसे अधिक संभावना है, जो हुआ वह यह था कि कुछ यहूदीवादी वास्तव में पॉल की प्रेरितिक योग्यता पर सवाल उठा रहे थे, और कह रहे थे कि या तो यह व्यक्ति सच्चा प्रेरित नहीं है, वह बस एक स्वयं-नियुक्त प्रेरित है या ऐसा ही कुछ है, या यदि वह है एक प्रेरित, वह एक प्रकार का पाखण्डी है, वह वास्तव में सच्चे यरूशलेम प्रेरितों के अनुरूप नहीं है।

ये महत्वपूर्ण स्तंभ पतरस, जेम्स और जॉन, ये प्रमुख प्रेरित हैं। पॉल एक पथभ्रष्ट है, वह एक प्रकार का पाखण्डी है, और वह वास्तव में उस सच्चे सुसमाचार से भटक गया है जिसे प्रेरित, पतरस, जेम्स और जॉन सिखा रहे हैं। तो, अब पॉल को इसका जवाब देना होगा।

और वह जो कर रहा है वह कुछ चीजों का प्रदर्शन कर रहा है। नंबर एक, हमें अपने रूपांतरण के पहले, दौरान और बाद का विवरण देकर, पॉल यह प्रदर्शित कर रहा है कि उसने कभी भी

अपना सुसमाचार एक साधारण इंसान से प्राप्त नहीं किया। वास्तव में, इसीलिए वे कहते हैं, मेरे धर्म परिवर्तन के बाद, मैं तुरंत यरूशलेम भी नहीं गया।

तो मैं मनुष्यों से यह सुसमाचार कैसे प्राप्त कर सकता था? अथवा मैं इस सुसमाचार को कैसे प्राप्त कर सकता था और फिर इसे विकृत कैसे कर सकता था? नहीं, वे कहते हैं, मुझे यह सीधे यीशु मसीह से प्राप्त हुआ। प्रेरितों के काम, अध्याय 9 के अनुसार, दमिश्क के रास्ते में, जब पॉल परिवर्तित हो गया, तो परमेश्वर ने दमिश्क के रास्ते में उसे नीचे गिरा दिया। पॉल कहते हैं, तभी मुझे अपना सुसमाचार प्राप्त हुआ।

तो, अभ्यास करके, और वे कहते हैं, इस सुसमाचार के लिए मुझे तैयार करने के लिए कुछ भी नहीं था। मैं एक जोशीला यहूदी था। मैं वास्तव में यीशु मसीह के चर्च को नष्ट करने की कोशिश कर रहा था।

तो, पॉल को सुसमाचार के लिए तैयार करने से पहले, उसके दौरान या उसके बाद कुछ भी नहीं था। यह केवल यीशु मसीह के प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के परिणामस्वरूप ही आ सकता था। पॉल इसी तरह बहस कर रहा है।

हालाँकि, पॉल बहस कर रहा है, पॉल एक तरह से रस्सी पर चल रहा है, क्योंकि उसे गलातियों में दो काम करने हैं। याद रखें, वह अपने गैर-यहूदी पाठकों को संबोधित कर रहा है कि कुछ यहूदीवादी आ गए हैं। वे पॉल की प्रेरिताई पर सवाल उठा रहे हैं।

वह कह रहा है, वह सच्चा प्रेरित नहीं है। वह जिस सुसमाचार का प्रचार करता है वह सिर्फ एक विकृति है। तो उस पर विश्वास मत करो।

और फिर अन्यजाति ईसाइयों को मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पित होने के लिए मनाने की कोशिश कर रहे हैं। अब, इसके जवाब में, गलातियों 1 और 2 में पॉल को दो चीजें करनी हैं। उसे रस्सी पर चलना है, क्योंकि, एक तरफ, उसे प्रदर्शित करना है, जैसा कि मैंने अभी कहा, उसे यह प्रदर्शित करना है कि उसका सुसमाचार किसी अन्य मानवीय प्राधिकार पर निर्भर नहीं था। कि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो उसे किसी और से मिली हो।

यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे उन्होंने स्वयं तैयार किया हो। यह यीशु मसीह के प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन से आया है। इसलिए, उसे यह तर्क देना होगा कि वह किसी और से स्वतंत्र है।

दूसरी ओर, पॉल को यह प्रदर्शित करने में भी सावधानी बरतनी होगी कि उसका सुसमाचार यरूशलेम के प्रेरितों के साथ असंगत नहीं है, कि उन्होंने इसे स्वीकार किया और इसका समर्थन किया। तो, क्या आप देखते हैं कि उसे कितना सावधान रहना होगा? एक ओर, उसे अपनी स्वतंत्रता का प्रदर्शन करना होगा, कि यह सुसमाचार किसी भी मानवीय अधिकार से स्वतंत्र होकर उसके पास आया है। यह उसे यीशु मसीह से मिला।

हालाँकि, उसे अभी भी अपनी निर्भरता दिखानी है, निर्भरता नहीं, बल्कि यह तथ्य कि उसके सुसमाचार को यरूशलेम के प्रेरितों द्वारा स्वीकार और मान्यता और पुष्टि की गई थी। इसलिए,

उसे यरूशलेम के प्रेरितों के प्रति अपनी स्वतंत्रता के साथ-साथ उन पर अपनी निर्भरता दिखाने के बीच भी चलना होगा, एक रास्ता चुनना होगा। ताकि उसके पाठकों को यह विश्वास हो जाए कि यह सुसमाचार जो पॉल ने उन्हें उपदेश दिया था, जब वह आया था, अधिनियमों के अनुसार, जब उसने इन शहरों का दौरा किया, एक चर्च की स्थापना की, यह सुसमाचार जो पॉल प्रचार करता है, कि किसी को बचाया जा सकता है, किसी को उचित ठहराया जा सकता है, केवल अनुग्रह के द्वारा, समर्पण के अलावा, और यीशु मसीह में विश्वास के अलावा, मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पण के अलावा, वह सुसमाचार कोई विकृति या कोई पथभ्रष्ट सुसमाचार नहीं है जिसे पॉल ने बनाया या विकृत किया है।

यह उस सुसमाचार से कम नहीं है जो उसने यीशु मसीह से प्राप्त किया है, और वह कहता है, वैसे, इन महत्वपूर्ण प्रेरितों, पीटर, जेम्स और जॉन ने स्वीकार किया और पुष्टि की और सहमत हुए कि यह एक वैध सुसमाचार था। इसलिए, उनके पाठकों को इन यहूदीवादियों के आगे झुकने की आवश्यकता क्यों है? इस सुसमाचार पर प्रश्न उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है, जिसे उन्होंने मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पित होने के अलावा, यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से पहले ही प्राप्त कर लिया है। अब, उस प्रश्न पर विचार करते समय, पॉल आश्चस्त क्यों था? और यहां, हम आगे जिस बारे में बात करने जा रहे हैं, बहुत संक्षेप में, आप रोमियों की पुस्तक के साथ ओवरलैप को पहचानेंगे, और वह यह है कि, पॉल आश्चस्त है।

यह उन पुस्तकों में से एक है जहां पॉल बाहर आता है और साहसिक बयान देता है कि हम यीशु मसीह में विश्वास से न्यायसंगत हैं, न कि कानून के कार्यों से। और आप इसे अध्याय 2 में पाएंगे, श्लोक 16 से शुरू करते हुए। वह कहते हैं, फिर भी हम जानते हैं, यह गलातियों 2.16 है, फिर भी हम जानते हैं कि कोई व्यक्ति कानून के कार्यों से उचित नहीं ठहराया जाता है।

और वैसे, जब पॉल कानून शब्द का उपयोग करता है, चाहे वह सिर्फ कानून हो या कानून के कार्य, ज्यादातर समय उसके पत्रों में उसका मतलब मूसा का कानून होता है। इसलिए, वे कहते हैं, हम मूसा के कानून के कार्यों से नहीं, मूसा के कानून का पालन करने और उससे बंधे होने से नहीं, बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से न्यायसंगत हैं। और वास्तव में उस वाक्यांश पर एक लंबी बहस चल रही है, यीशु मसीह में विश्वास, वास्तव में इसका क्या मतलब है, मैं इसमें नहीं जा रहा हूं, लेकिन मुझे विश्वास है कि इसे लेने का यही तरीका है, यीशु मसीह में विश्वास।

इसलिए, किसी को मूसा के कानून का पालन करने के आधार पर, बल्कि पूरी तरह से यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर, ईश्वर के सामने न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है या धर्मी घोषित नहीं किया जा सकता है, यह पॉल का तर्क है। अब फिर सवाल यह है कि ऐसा क्यों है? पौलुस ने कानून के बारे में क्या सोचा? वह क्यों आश्चस्त था कि कानून के कार्यों से औचित्य नहीं मिल सकता? हमने रोमनों के साथ देखा कि पारंपरिक रूप से, और पारंपरिक रूप से यह मार्टिन लूथर ही थे जिन्होंने प्रस्तावित किया था कि कानून के कार्यों से, पॉल का मतलब विधिवाद से था, कानूनी रूप से पर्याप्त अच्छे कार्य करने का प्रयास करना जिससे कोई व्यक्ति भगवान का अनुग्रह अर्जित कर सके। और पॉल इसी के विरुद्ध प्रतिक्रिया दे रहा था।

इसलिए, पॉल का कहना है, हम जानते हैं कि हम पर्याप्त अच्छे कार्य करके भगवान का अनुग्रह अर्जित करने का प्रयास करके उचित नहीं हैं कि भगवान किसी भी तरह से हमसे प्रसन्न होंगे, बल्कि, हम इसे त्याग कर और केवल यीशु मसीह पर भरोसा करके न्यायसंगत हैं। . मार्टिन लूथर ने इसे इसी तरह समझा। उन्होंने कानून के कार्यों को ईश्वर की कृपा और उनका आशीर्वाद अर्जित करने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए कानूनी रूप से अच्छे कार्य करने की कोशिश के रूप में लिया।

और पॉल इसी के खिलाफ़ बोलता है। हालाँकि, हमने देखा कि हाल ही में, एक दृष्टिकोण जिसे नया परिप्रेक्ष्य या नया रूप कहा जाता है, मैंने इसे आपकी पाठ्यपुस्तक में कहा है। तो फिर, पॉल में अत्यधिक बदलाव आया है, इसलिए कहें तो, जिस तरह से हम पॉल को समझते हैं और पढ़ते हैं और कानून के प्रति उसका दृष्टिकोण बदल गया है।

हमने देखा कि सैंडर्स और जेम्स डन जैसे लोग, और यदि आप में से कोई एनटी राइट के लेखन से परिचित है, तो आपने एनटी राइट, राइट, एनटी राइट के कुछ लेखन को देखा है, क्या वे सुझाव देंगे कि पॉल कानूनीवाद के खिलाफ़ बहस नहीं कर रहा था, लेकिन राष्ट्रवाद या विशिष्टतावाद। अर्थात्, कानून के कार्य एक यहूदी के रूप में जीवन जीने के लिए एक प्रकार की संहिता हैं। तो, जो ग़लत था, जिसके खिलाफ़ पॉल प्रतिक्रिया दे रहा था, वह यह कि यहूदीवादी कानूनवाद को बढ़ावा नहीं दे रहे थे, ईश्वर का अनुग्रह अर्जित करने की कोशिश कर रहे थे, वे मुक्ति को एक यहूदी के रूप में जीवन जीने तक ही सीमित कर रहे थे।

वे संकीर्ण हो रहे थे, कि ईश्वर के लोगों से संबंधित होने का मतलब जातीय रूप से किसी को यह प्रदर्शित करने के लिए मूसा के कानून के प्रति समर्पण करके यहूदियों के साथ पहचान करना था। और पॉल जो करने की कोशिश कर रहा है वह यह कहना है, नहीं, नहीं, नहीं, मोक्ष सिर्फ़ यहूदियों की संपत्ति नहीं है, यह अब यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से किसी का भी है। तो, नया रूप बताता है कि मुख्य मुद्दा यह है कि भगवान के सच्चे लोग कौन हैं? क्या केवल वे ही लोग हैं जो कानून के माध्यम से इज़राइल और यहूदियों के साथ पहचान रखते हैं, या क्या अन्यजाति केवल विश्वास के द्वारा और यहूदी के रूप में जीवन जीते बिना ईश्वर के लोग बन सकते हैं? और पॉल यही तर्क देना चाहता है, हाँ, यहूदी धर्म के तहत जीवन जीते बिना अन्यजाति भी परमेश्वर के लोग हो सकते हैं।

अब गलातियों में भी वही प्रश्न उठता है कि फिर पॉल किस बात से इतना परेशान है? वह किसके खिलाफ़ बहस कर रहा है? कानून से उसे क्या दिक्कत है? वह यह क्यों कहता है कि व्यवस्था के कामों से कोई भी धर्मी नहीं ठहराया जा सकता? क्या यह कानूनवाद के कारण है, क्योंकि हम ईश्वर का अनुग्रह अर्जित नहीं कर सकते हैं, या क्या यह विशिष्टतावाद और राष्ट्रवाद के कारण है, कि यह वास्तव में प्रतिबंधात्मक है, यह मोक्ष को बहुत अधिक प्रतिबंधित करता है, और यह ईश्वर के लोगों से संबंधित होने को यहूदी होने और जीने तक ही सीमित करता है यहूदी धर्म के तहत जीवन. मुझे ऐसा लगता है, फिर भी शायद मैं बाड़ पर बहुत अधिक सवारी करने वालों में से एक हूँ, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच इतना तीव्र अंतर निकालने का वास्तव में कोई कारण नहीं है। एक ओर, मुझे लगता है कि मार्टिन लूथर सच्चाई के करीब थे जब

उन्होंने सुझाव दिया कि पॉल ने सोचा था कि समस्या का एक हिस्सा मूसा के कानून को प्रस्तुत करने में था, तब व्यक्ति कानून को बनाए रखने की अपनी क्षमता पर भरोसा कर रहा था।

और कोई व्यक्ति यहूदी धर्म के साथ पहचान करने की क्षमता और कानून को पूरी तरह से बनाए रखने की अपनी क्षमता पर भरोसा कर रहा था। तो, अध्याय 3 और श्लोक 10 में, जिस पाठ का मैंने यहां उल्लेख किया है, तो फिर, कानून का पालन करके किसी को भी उचित क्यों नहीं ठहराया जा सकता है? अध्याय 3 पद 10 में, पौलुस कहता है, क्योंकि जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों को नहीं मानता और उनका पालन नहीं करता, वह शापित है। मूसा का कानून है। तो, वह कह रहा है, मुझे लगता है कि मार्टिन लूथर के पास एक बात थी, जिसे पॉल कह रहा है, यदि आप कानून के आधार पर न्यायसंगत होना चाहते हैं, तो यह पूर्ण पालन की मांग करता है।

परन्तु पौलुस कहता है, यद्यपि व्यवस्था ने कहा है कि जो कोई उसका पालन नहीं करता, या उस में लिखी हुई हर बात को नहीं मानता, वह शापित है। और इसलिए समस्या यह है कि चूंकि पाठक ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए कोई भी व्यक्ति ईश्वर की कृपा अर्जित करने के लिए आवश्यक सीमा तक कानून का पालन नहीं कर सकता है। और वह मार्टिन लूथर के बिंदुओं में से एक था।

और मुझे लगता है कि यह पॉल के बयान में परिलक्षित होता है। हर कोई जो कानून द्वारा औचित्य का पीछा करना चाहता है, उसे यह एहसास होना चाहिए कि यदि आप इसे पूरी तरह से नहीं रखते हैं तो आप शापित हैं। और मुझे लगता है कि धारणा यह है कि मानवीय पापपूर्णता के कारण कोई भी ऐसा नहीं कर सकता है।

तो वह मार्टिन लूथर था, और मुझे लगता है कि पॉल जो कह रहा है वह अभी भी एक वैध पाठ है। तो यह एक कारण है। पुनः, एक से अधिक भी हो सकते हैं।

मैं सुझाव देने जा रहा हूँ कि वहाँ है। लेकिन पौलुस ने सोचा कि कानून को उचित नहीं ठहराया जा सकता, इसका एक कारण यह था कि कोई भी इसे पूरी तरह से बनाए नहीं रख सकता था। कानून अपने साथ इसका पालन न करने, इसका पूरी तरह से पालन न करने का अभिशाप लेकर आया।

हालाँकि, पॉल भी आश्चर्य है, और यहीं पर नया रूप या नया दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है, पॉल यह भी आश्चर्य है कि कानून केवल यीशु मसीह के आने तक अस्थायी रूप से कार्य करने के लिए था। और कानून से मेरा मतलब सिर्फ नियमों और विनियमों की सूची से नहीं है। मेरा अभिप्राय संपूर्ण मोज़ेक वाचा से संबंधित कानून से है।

वह संपूर्ण वाचा जो परमेश्वर ने मूसा के अधीन इस्राएल के साथ बनाई थी। पॉल के अनुसार, कानून के साथ-साथ वह पूरी अवधि, मसीह के आने तक केवल अस्थायी थी। तो, उन दो कारणों से, पॉल कहता है, अपने पाठकों से कहता है, और मूल रूप से उनसे विनती करता है, आप मूसा की व्यवस्था के अधीन क्यों होना चाहेंगे? क्योंकि इसे कोई भी पूरी तरह से नहीं रख सकता।

जो कोई भी जीवित नहीं रहता, उसके लिए यह एक अभिशाप है। और दूसरा, मसीह के आने तक कानून केवल अस्थायी था। अब जब मसीह आ गया है, तो मोज़ेक वाचा के हिस्से के रूप में कानून का प्राथमिक कार्य समाप्त हो गया है।

इसका निधन हो चुका है। तो फिर पाठक इन यहूदीवादियों के आगे झुकना और मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पण क्यों करना चाहते हैं? अब कृपया मेरी बात सुनें। पॉल यह नहीं कह रहा है, इसलिए, हम किसी भी कानून से मुक्त हैं।

कुछ लोगों ने गलातियों को गलत अर्थ में पढ़ा है, इसलिए, मैं मसीह में जो चाहूँ वह करने के लिए स्वतंत्र हूँ। यह पॉल की बात नहीं है। वह जो कह रहा है वह यह है कि, वे मूसा के साथ बनाई गई परमेश्वर की वाचा के हिस्से के रूप में आदेशों और नियमों के एक बाध्यकारी निकाय के रूप में, मोज़ेक विधान से मुक्त हैं।

वह अब यीशु मसीह और नई वाचा में ग्रहण और पूर्ण हो गया है जिसे वे अब उसके माध्यम से अनुभव करते हैं। अब, अध्याय 3 और 4 में, यह दूसरा बिंदु मुझे आपके नोट्स में अगले अवलोकन की ओर ले जाता है, और वह अध्याय 3 और 4 का महत्व है। अध्याय 3 और 4 में, मुझे याद नहीं है कि मेरे पास... मेरे पास इस पर एक स्लाइड है। अध्याय 3 और 4 में, पॉल तर्कों की एक श्रृंखला प्रस्तुत करने जा रहा है।

मैं अभी भी आश्चर्य नहीं हूँ कि यह ग्रीको-रोमन भाषण की संभावना है, लेकिन फिर भी, पॉल सबूतों या तर्कों की एक श्रृंखला के माध्यम से अपने पाठकों को बहस करने और मनाने की कोशिश कर रहा है। और उनमें से एक, पहला, अध्याय 3, 1 से 5 में पाया जाता है। और यहाँ, पॉल गलातियों के अनुभव से तर्क देता है। वह गलातियों से कह रहा है... फिर से, याद रखें, गलातियों को मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पण करने के लिए प्रलोभित किया जा रहा है।

यहूदीवादियों ने उनसे कहा है कि मसीह में उनका विश्वास, हालांकि आवश्यक है, मूसा के कानून के प्रति समर्पित होकर पूरक होना चाहिए। और अब पॉल उसके विरुद्ध बहस करना चाहता है। अध्याय 3, श्लोक 1 से 5 में, ध्यान दें कि वह कैसे शुरू करता है, उन्हें अपने पक्ष में लाने का यह अच्छा तरीका नहीं है, लेकिन फिर से, याद रखें, गैलाटियन की प्रतिक्रिया पर पॉल बहुत हैरान और परेशान और हताश है।

वह कहता है, तुम्हें किस ने मोहित कर लिया है? यह आपकी आंखों के सामने था कि ईसा मसीह को सार्वजनिक रूप से क्रूस पर चढ़ाया गया था। एकमात्र चीज जो मैं आपसे सीखना चाहता हूँ वह यह है। और अब पॉल उनसे उचित निष्कर्ष निकालने और अपने मामले पर बहस करने के लिए कुछ प्रश्न पूछने जा रहा है।

यहाँ पहला प्रश्न है। क्या तुम्हें व्यवस्था के काम करने से या जो कुछ सुना उस पर विश्वास करने से आत्मा प्राप्त हुआ? अब मैं आपसे पूछता हूँ, पॉल आत्मा से अपील क्यों करता है? यहाँ मैं इसका अर्थ पवित्र आत्मा से लेता हूँ। यदि आपके अंग्रेजी अनुवाद में स्पिरिट बड़े अक्षरों में लिखा है, तो संभवतः यह सही है।

पॉल पवित्र आत्मा की बात कर रहा है। लेकिन इसका उसके तर्क से क्या लेना-देना है? इसका यह साबित करने से क्या लेना-देना है कि गलातियों को मूसा की व्यवस्था के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता नहीं है? वह कहता है मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। क्या आपको पवित्र आत्मा कानून का पालन करने, कानून के काम करने, या जो कुछ आपने सुना उस पर विश्वास करने, यानी यीशु मसीह और पौलुस द्वारा प्रचारित सुसमाचार पर भरोसा करने से प्राप्त हुआ? पॉल ऐसा क्यों कहता है? इससे उसके मामले में कैसे मदद मिलती है? फिर से, वह अपने अनुभव से बहस कर रहा है और कह रहा है, क्या आपको कानून का पालन करने से या उस संदेश पर विश्वास करने से पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ जो मैंने आपको सुनाया था, यीशु मसीह में विश्वास पर केंद्रित सुसमाचार? पॉल ने यह प्रश्न क्यों उठाया? मेरा मतलब है, वह क्या करने जा रहा है? दूसरे शब्दों में, वह आत्मा का आह्वान क्यों करता है? वे पवित्र आत्मा प्राप्त कर रहे हैं, जो संभवतः कुछ चीजों को प्रतिबिंबित करता है जो हमने अधिनियमों में देखीं, जैसे अधिनियम अध्याय 2, विश्वासियों पर पवित्र आत्मा का उंडेला जाना।

पॉल आत्मा से अपील क्यों करता है? मेरा मतलब है, यह कुछ अजीब, कुछ व्यक्तिपरक लगता है, क्या आपको आत्मा प्राप्त हुआ? क्या वह कह रहा है, जब आप बचाए गए थे तो क्या आपके मन में ये गर्म, अस्पष्ट भावनाएँ आई थीं और यह इस बात का प्रमाण है कि आप भगवान के लोग हैं इसलिए आपको कानून का पालन करने की आवश्यकता नहीं है? वह पवित्र आत्मा से क्यों अपील कर रहा है? हमने क्या कहा पृष्ठभूमि थी? नए नियम में, विशेषकर पॉल में, हम पॉल को पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हुए पाते हैं। उसकी पृष्ठभूमि क्या है? उसे इस तथ्य का विचार कहां से मिलता है कि अब हमारे पास पवित्र आत्मा है? पॉल को वह कहाँ से मिला? बहुत अच्छा। यीशु की ओर से, जिसने पवित्र आत्मा को भेजने और उँडेलने की बात की।

और हम इसे और भी पीछे धकेल सकते हैं और कह सकते हैं कि यीशु ने इसे पुराने नियम से प्राप्त किया था। यदि आपको याद हो, तो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने एक ऐसे समय का वादा किया था जब परमेश्वर एक नई वाचा स्थापित करेगा, और फिर, यह नई वाचा पर आधारित था कि हम परमेश्वर के लोग बनें। यह तथ्य कि हम परमेश्वर के बच्चे और परमेश्वर के लोग हैं, एक नई वाचा के वादे पर आधारित है।

इसलिए, जब यीशु ने इस तथ्य के बारे में बात की कि वह अपनी आत्मा को उँडेल देगा और वह अपनी आत्मा को अधिनियमों में भेजेगा, और आप इसके बारे में जॉन में पढ़ते हैं, तो यह पुराने नियम में वापस चला जाता है। यीशु मूलतः नई वाचा स्थापित करने का वादा कर रहे हैं। तो अब पॉल क्या कह रहा है? वह उनसे पूछ रहा है, मूल रूप से, क्या आपको कानून का पालन करते हुए प्रमाण के रूप में नई वाचा की पवित्र आत्मा प्राप्त हुई है या नहीं? और धारणा यह है कि, वह मान रहा है कि विश्वासियों को पवित्र आत्मा प्राप्त हुई, संभवतः अधिनियम अध्याय 2 के समान। और शायद पॉल यह मान रहा है कि अन्य भाषाओं में बोलना और इनमें से कुछ अन्य चमत्कारी चीजें इसका प्रमाण थीं।

लेकिन फिर से, पॉल का तर्क, अगर मैं संक्षेप में बता सकता हूँ, तो वह कह रहा है, क्या आपको प्रमाण के रूप में पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ, पुराने नियम के नए अनुबंध के वादे के अनुसार, पवित्र

आत्मा इस बात का प्रमाण होगा कि वे भगवान के लोग थे। अब वह कह रहा है, तुम्हें पवित्र आत्मा किस आधार पर प्राप्त हुआ? आपको किस आधार पर यह नई वाचा की आत्मा प्राप्त हुई जो साबित करती है कि आप वास्तव में परमेश्वर के लोग हैं? क्या तुमने इसे कानून का पालन करके प्राप्त किया, या तुमने इसे केवल विश्वास करके प्राप्त किया? और निःसंदेह, उत्तर यह है कि, हमें यह तब प्राप्त हुआ जब पॉल ने सुसमाचार का प्रचार किया और जब हमने उस पर विश्वास किया। तो, पॉल का निष्कर्ष होगा, फिर आपको क्यों लगता है कि आपको कानून जोड़ने की आवश्यकता है? आपके पास पहले से ही संकेत है कि आप परमेश्वर के लोग हैं, वह नई वाचा की पवित्र आत्मा है, जिसका वादा यहेजकेल और यिर्मयाह और पुराने नियम में किया गया था, और जिसे हमने प्रेरितों के काम 2 में देखा था। इसलिए, उनके पास पहले से ही सच्चा संकेत है कि वे हैं परमेश्वर की नई वाचा के लोग, उन्हें पुराने नियम के कानून को जोड़ने की आवश्यकता क्यों है? तो यह उनका पहला तर्क है, अनुभव से उनका तर्क है।

वास्तव में, अन्य प्रश्नों को पढ़ने के लिए, वह कहते हैं, क्या तुम इतने मूर्ख हो कि आत्मा से आरम्भ करके अब शरीर पर ही समाप्त करने जा रहे हो? क्या आपने बिना कुछ लिए इतना कुछ अनुभव किया, यदि यह वास्तव में कुछ भी नहीं था? तो फिर, पॉल उनके अनुभव की अपील करता है। तथ्य यह है कि उन्होंने पुराने नियम में वादा की गई नई वाचा पवित्र आत्मा का अनुभव किया है और प्राप्त किया है, यह एक संकेत है कि वे वास्तव में भगवान के लोग थे, अगर उन्होंने इसे प्राप्त किया, और उन्होंने ऐसा किया, केवल विश्वास के आधार पर, तो पुराने नियम का क्या मतलब हो सकता है कानून उसमें जोड़ें? उनके पास पहले से ही सच्चा संकेत है कि नए युग का उद्घाटन हो चुका है, राज्य का उद्घाटन हो चुका है, और नई वाचा, और वे परमेश्वर के लोग हैं। दूसरी बात जिसके लिए पॉल तर्क करता है वह यह है कि पॉल पुराने नियम से अध्याय 3 में तर्क करता है। और जिस तरह से पॉल ऐसा करता है वह पॉल ऐतिहासिक रूप से तर्क देता है, यह दिखाने के लिए कि मूसा के कानून ने केवल एक अस्थायी भूमिका निभाई है।

दूसरे शब्दों में, पॉल मूल रूप से इस तरह बहस करने जा रहा है, वह कहने जा रहा है, इब्राहीम से किए गए वादे। यदि आप पीछे जाएँ, तो पॉल क्या करता है, कि वह मूल रूप से मुक्ति के सभी वादों को इब्राहीम से जुड़ा हुआ समझता है। याद रखें कि उत्पत्ति 12 में परमेश्वर ने इब्राहीम से क्या वादा किया था? उस ने कहा, मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और पृथ्वी की सारी जातियां आशीष देंगी।

तो, मूल रूप से, मुक्ति, या औचित्य, पॉल द्वारा उपयोग की जाने वाली कुछ भाषा, पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए, वे सभी इब्राहीम से जुड़े हुए हैं। और प्रश्न, प्रश्न यह है कि हम इब्राहीम से किए गए वादों को कैसे प्राप्त करते हैं? अब, अधिकांश, पहली शताब्दी में, इन यहूदीवादियों ने कहा होगा, अच्छा, यह मोज़ेक कानून के माध्यम से है। यह मूसा के कानून का पालन करने से है, कि कोई इब्राहीम के वादे प्राप्त करता है।

एक महान राष्ट्र की, आशीर्वाद की, मुक्ति की, औचित्य की, पवित्र आत्मा की प्राप्ति, ये सभी इब्राहीम के वादे हैं, और आप मोज़ेक कानून का पालन करके उनमें भाग लेते हैं। पॉल जो करता है वह कहता है, नहीं, नहीं, नहीं, यदि आप पुराने नियम को पढ़ेंगे, तो पॉल की योजना इस तरह दिखेगी, वह कहता है, मोज़ेक कानून ने वास्तव में केवल तब तक एक अस्थायी भूमिका निभाई

जब तक अब्राहम के वादे मसीह में पूरे नहीं हो गए। इसलिए, वास्तव में, मुझे शायद इब्राहीम के वादों से मसीह में पूर्ति तक एक तीर खींचना चाहिए, क्योंकि पॉल आश्वस्त है कि मोज़ेक कानून वह प्राथमिक तरीका नहीं था जिससे इब्राहीम और मोक्ष के वादे भगवान के लोगों द्वारा अनुभव किए गए थे।

यह अब केवल मसीह में विश्वास के माध्यम से है। इसलिए, मोज़ेक कानून ने केवल एक अस्थायी भूमिका निभाई। इसलिए, उदाहरण के लिए, वह जो कहता है उसे सुनें।

उन सभी के लिए, आइए देखें, मैंने वह पढ़ा। भाइयों और बहनों, मैं आपको दैनिक जीवन से एक उदाहरण देता हूं। एक बार जब किसी व्यक्ति की वसीयत की पुष्टि हो जाती है, तो कोई भी उसमें कुछ नहीं जोड़ता या उसे रद्द नहीं करता।

अब जो प्रतिज्ञा इब्राहीम और उसकी सन्तान से की गई है, वह यह नहीं कहती, कि और सन्तान बहुत हो, परन्तु यह कहती है, और तुम्हारी सन्तान के लिये, जो मसीह है। चलो देखते हैं। फिर वो कहते हैं ये सुनो।

पॉल कहते हैं, मेरा कहना ये है. कानून, जो 430 साल बाद आया, ईश्वर द्वारा पहले बनाई गई वाचा, इब्राहीम के साथ की गई वाचा को रद्द नहीं करता है। तो, उनका कहना यह है कि, मोज़ेक वाचा इसे पलटती नहीं है या मिसाल कायम नहीं करती है।

इसके बजाय, वह आगे कहेगा, कि यदि विरासत कानून के अनुसार आती है, तो यह अब वादे के द्वारा नहीं आती है। परन्तु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के द्वारा इब्राहीम को यह प्रदान किया। तो, फिर से, इन सबके माध्यम से पॉल जो कहना चाह रहा है वह यह है कि मोज़ेक कानून ने यीशु मसीह के आने तक केवल एक अस्थायी भूमिका निभाई थी।

अब जब यीशु मसीह आ गए हैं, तो कानून का मुख्य कार्य अलग हो गया है। अब, फिर से, हमें अभी भी यह प्रश्न उठाना होगा कि ईसाइयों को कानून कैसे पढ़ना चाहिए? हमें इसका क्या करना चाहिए? क्या हम इसे नजरअंदाज कर सकते हैं? मेरा मानना है कि उत्तर नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि हमें इससे क्या लेना-देना? हम मूसा को दिए गए कानून को कैसे पढ़ते हैं? फिर, जब हम कानून के बारे में बात कर रहे हैं, तो हम किसी कानून का जिक्र नहीं कर रहे हैं।

हम उस कानून की बात कर रहे हैं जो मूसा को उस वाचा के हिस्से के रूप में दिया गया था जिसे परमेश्वर ने मूसा के साथ बनाया था। लेकिन क्या आप अब तक उसकी बात समझ पाए हैं? पॉल कह रहा है, मोज़ेक कानून इब्राहीम से वादा किए जाने के वर्षों बाद आया। और जैसा कि वह आगे बढ़ने और प्रदर्शित करने जा रहा है, जब तक मसीह का आगमन नहीं हुआ, तब तक कानून ने केवल एक अस्थायी भूमिका निभाई, जब तक कि मसीह इब्राहीम से किए गए वादे को पूरा नहीं कर सका।

मूसा की व्यवस्था ने इसे पूरा नहीं किया। यीशु मसीह ने किया। कानून ने केवल अस्थायी भूमिका निभाई और अब वह भूमिका खत्म हो गई है।

लेकिन मुझे तीसरे बिंदु, संस्कृति के तर्क पर नजर डालने दीजिए। पॉल यह दिखाने की कोशिश करने जा रहा है कि मोज़ेक कानून अस्थायी है, पॉल उनकी संस्कृति में कुछ चीजों के बारे में बहस करने जा रहा है। और श्लोक 23 से शुरू करते हैं।

अब, पॉल द्वारा उपयोग किए गए विभिन्न रूपकों को सुनें। अब, विश्वास आने से पहले, और विश्वास के द्वारा, वह मसीह के आगमन, और मसीह पर विश्वास करने और विश्वास करने के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग करेगा। कभी-कभी वह सिर्फ वादे का हवाला देगा।

कभी-कभी वह मसीह का उल्लेख करेगा। कभी-कभी वह आस्था का उल्लेख करेगा। लेकिन ये सभी एक ही चीज़ को संदर्भित करने के तरीके हैं।

मसीह का आगमन, और औचित्य और मुक्ति के लिए उस पर भरोसा करना। इसलिए, वे कहते हैं, अब विश्वास आने से पहले, हमें तब तक कैद में रखा जाता था और कानून के तहत सुरक्षा दी जाती थी जब तक कि विश्वास प्रकट न हो जाए। तो, ध्यान दें कि पॉल द्वारा उपयोग किया जाने वाला पहला रूपक जेल या जेल प्रहरी का है।

उनका कहना है कि कानून एक तरह से भगवान के लोगों को कैद में रखने का काम करता है। यह एक जेल की तरह काम करता था। वह यह नहीं कह रहा है कि इज़राइल बुरा था और उन्हें सज़ा या ऐसा कुछ चाहिए था।

संपूर्ण मुद्दा यह है कि कानून का उद्देश्य बहुत ही प्रतिबंधात्मक था। इसने सीमित समय के लिए बहुत विशिष्ट तरीके से कार्य किया। एक जेल या जेल की तरह, यह भगवान के लोगों को बंद करने और उनकी रक्षा करने का काम करता था।

जब तक यीशु मसीह नहीं आये और इब्राहीम को वादा किया हुआ उद्धार नहीं दिलाये। तो पहला रूपक एक जेल प्रहरी है, एक जेल की कल्पना या किसी को बंद करना। लेकिन फिर वे श्लोक 24 में कहते हैं, मसीह के आने तक कानून भी हमारा अनुशासनात्मक था ताकि हम न्यायसंगत हो सकें।

एक अनुशासक की वह छवि पहली सदी की एक बहुत ही महत्वपूर्ण छवि पर आधारित है। विशेष रूप से धनी लोगों के लिए, यदि आपका कोई बच्चा होता है, आमतौर पर बेटा होता है, तो आमतौर पर आप क्या करते हैं कि आप एक अनुशासक को नियुक्त करते हैं जो मूल रूप से उस बच्चे की देखभाल और पालन-पोषण के लिए जिम्मेदार होता है। यहां छवि एक शिक्षक की नहीं है जो आपको कुछ सिखाता है या आपकी ओर ले जाता है, बल्कि यह एक अनुशासक या एक दाई की है जो आपको परेशानी से दूर रखती है।

दूसरे शब्दों में, वयस्क होने तक आपको इस अनुशासन के अधीन रखा गया था। जब तक आप एक निश्चित उम्र तक नहीं पहुँच जाते, तब तक उस अनुशासनप्रिय व्यक्ति की आवश्यकता नहीं रह जाती थी। तो पॉल इस कल्पना का उपयोग करके जो कर रहा है वह यह कह रहा है कि कानून एक अनुशासनात्मक की तरह था जैसे एक अनुशासनात्मक बच्चे के जीवन में सीमित समय के लिए कार्य करता है जब तक कि वे परिपक्वता और वयस्कता तक नहीं पहुँच जाते।

इसलिए कानून ने यीशु मसीह के आने तक, जब तक कि वह पूर्णता लाने के लिए नहीं आया, एक अस्थायी भूमिका निभाई। तो, पॉल एक जेलर की कल्पना का उपयोग करता है, वह एक अनुशासनप्रिय की छवि का उपयोग करता है। ये दोनों पहली सदी के ईसाइयों की संस्कृति और जीवन से बाहर कर दिए गए हैं।

पॉल इन सबका उपयोग करता है, फिर से वह अपना मामला बढ़ा रहा है, वह इन सभी छवियों और पुराने नियम का सहारा लेकर यह प्रदर्शित कर रहा है कि कानून ने केवल एक अस्थायी भूमिका निभाई है। इसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन यीशु मसीह के आने तक यह केवल अस्थायी था। और एक बार जब यीशु मसीह इब्राहीम को वादा पूरा करने और मुक्ति दिलाने के लिए आए, तो मोज़ेक कानून अब अपनी प्रमुख भूमिका नहीं निभाता है।

तो पाठक इसे क्यों प्रस्तुत करना चाहेंगे? फिर, पाठक इन यहूदीवादियों के सामने झुकने में इतनी जल्दी क्यों करेंगे जो उन्हें बता रहे हैं कि यीशु में विश्वास ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि आपको मोज़ेक कानून के प्रति भी समर्पण करना होगा? पॉल कहते हैं, नहीं, नहीं, क्या आपको याद नहीं है कि कानून का पालन करने के अलावा, आपको पवित्र आत्मा, नई वाचा की आत्मा, एक संकेत के रूप में प्राप्त हुई थी कि आप वास्तव में भगवान के लोग हैं? और वह कहता है, क्या तुमने पुराने नियम को नहीं देखा है? क्या आपने जेलर और अनुशासनप्रिय की अपनी कुछ सांस्कृतिक छवियों पर विचार नहीं किया है? यह सब उन्हें प्रदर्शित करना चाहिए कि मोज़ेक कानून ने अपने लोगों के लिए भगवान के उद्धार के कार्यान्वयन में एक अस्थायी भूमिका निभाई। अब जबकि वह भूमिका समाप्त हो गई है, गलाटियन ईसाइयों को कानून के अधीन होने की कोई आवश्यकता नहीं है। वे, एक तरह से, पीछे जाकर मूसा के कानून के अधीन क्यों होना चाहेंगे? अब, यह अभी भी सवाल उठाता है कि कई लोगों को आश्चर्य भी हुआ होगा।

यदि उन्हें मूसा के कानून के प्रति समर्पण नहीं करना है, तो हम एक प्रश्न पूछेंगे कि, मूसा का कानून क्या भूमिका निभाता है? लेकिन दूसरा, क्या इसका मतलब यह है कि ईसाई किसी भी दायित्व या जिम्मेदारी या किसी भी कानून से मुक्त हैं? और पॉल, एक अर्थ में, गलातियों के शेष खंडों में उन प्रश्नों का उत्तर देगा। तो, क्या है इसके बारे में अब तक कोई प्रश्न... मेरा मतलब है, उम्मीद है, आप देख रहे हैं कि पॉल, वह अपने पाठकों को इन यहूदीवादियों के आगे न झुकने के लिए एक प्रेरक मामला खड़ा करने की कोशिश कर रहा है। वह हमें केवल कानून या पवित्र आत्मा का धर्मशास्त्र नहीं दे रहा है।

वह अपने पाठकों के साथ बहस करने और उन्हें यहूदीवादियों के आगे न झुकने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा है।

यह गैलाटियंस की पुस्तक पर न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर व्याख्यान 19 में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं।